

Ganpati Invocation

We will chant mantra OM three times following ganpati invocation by chanting vedic shanthi Mantra.

वैदिक शान्ति मन्त्र

ॐ गणानां त्वा गणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिस्सीद-
सादनम्। ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः
प्रचोदयात्। ॐ नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय
हिरण्यपतये अम्बिकापतये उमापतये पशुपतये नमो नमः ॥
ऋतः सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वं रेतं विरूपाक्षं
विश्वरूपाय वै नमो नमः ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

गणपति गायत्री

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

गणपति-स्तवः

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं निरानन्दमानन्दमद्वैतपूर्णम्।
परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ १ ॥
गुणातीतमानं चिदानन्दरूपं चिदाभासकं सर्वगं ज्ञानगम्यम्।
मुनिध्येयमाकाशरूपं परेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ २ ॥
जगत्कारणं कारणज्ञानरूपं सुरादिं सुखादिं युगादिं गणेशम्।
जगद्-व्यापिनं विश्ववन्द्यं सुरेशं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम ॥ ३ ॥

Kirtan

गं गणपतये नमो नमो

गं गणपतये नमो नमो

सिद्धि विनायक नमो नमो

अष्ट विनायक नमो नमो

गणपति बप्पा मोरया

गौरी गणेश, उमा गणेश

पार्वती नंदन श्री गणेश

शिव शिव शिव शंभो हर हर हर शंभो

महादेव शंभो महादेव शंभो

श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे

हे नाथ नारायण वासुदेवा

महामंत्र कीर्तन

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरि सुंदर नंद मुकुंदा हरि नारायण हरि ॐ

हरि केशव हरि गोविंद हरि नारायण हरि ॐ

हरि केशव हरि गोविंद हरि नारायण हरि ॐ

वनमाली मुरलीधारी गोवर्धन गिरिवर्धारी

वनमाली मुरलीधारी गोवर्धन गिरिवर्धारी

नित नित कर माखन चोरी गोपी मन हारी

आओ रे गाओ रे गोकुल के प्यारे

आओ रे कान्हा रे गोकुल के प्यारे

आओ रे नाचो रे रास रचाओ रे

गाओ रे नाचो रे रास रचाओ रे

हरि सुंदर नंद मुकुंदा हरि नारायण हरि ॐ

हे राम, हे राम

जग में साचो तेरो नाम

हे राम, हे राम

तू ही माता, तू ही पिता है तू ही तो है राधा का श्याम

हे राम, हे राम

तू अंतर्दामी, सबका स्वामी तेरे चरणों में चारों धाम

हे राम, हे राम

तू ही बिगड़े, तू ही संवारे इस जग के सारे काम

हे राम, हे राम

तू ही जगदाता, विश्वविधाता तू ही सुबह, तू ही शाम

हे राम, हे राम

जगदम्बिके जय जय जग जननी माँ।

जय माँ, जय माँ, जय माँ जय माँ।

हे माँ, हे माँ, हे माँ, हे माँ।

अच्युतम केशवं कृष्ण दामोदरं,

राम नारायणं, जानकी वल्लभम्॥

कौन कहता है भगवान आते नहीं,

तुम मीरा के जैसे बुलाते नहीं।

कौन कहता है भगवान खाते नहीं,

बेर शबरी के जैसे खिलाते नहीं।

कौन कहता है भगवान सोते नहीं,

माँ यशोदा के जैसे सुलाते नहीं।

कौन कहता है भगवान नाचते नहीं,

तुम गोपी के जैसे नचाते नहीं।

कौन कहता है भगवान नचाते नहीं,

गोपियों की तरह तुम नाचते नहीं।

अच्युतम केशवं कृष्ण दामोदरं,

राम नारायणं जानकी वल्लभम्॥

श्रीधरम् माधवं गोपिका वल्लभं

जानकी नायकम्, रामचन्द्रम् हरे॥

शिव स्तुति

जय शिवशंकर, जय गंगाधर, करुणाकर करतार हरे,
जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशी, सुख-सार हरे,
जय शशि-शेखर, जय डमरू-धर, जय जय प्रेमागार हरे,
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित अनन्त अपार हरे,
निर्गुण जय जय, सगुण अनामय, निराकार, साकार हरे,
पारवती पति, हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 1 ॥

जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे,
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ जय, महाकाल ओंकार हरे,
त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर जगतार हरे,
काशीपति, श्री विश्वनाथ जय, मंगलमय, अघ हार हरे,
नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे,
पारवती पति, हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 2 ॥

जय महेश, जय जय भवेश, जय आदि देव, महादेव विभो,
किञ्च मुख से हे गुणातीत प्रभु, तव अपार गुण वर्णन हो,
जय भवकारक, तारक, हारक, पातक-दारक, शिव शम्भो,
दीन दुःखहर, सर्व सुखाकर, प्रेम सुधाकर दया करो,
पार लगा दो भवसागर से, बनकर कर्णाधार हरे,
पारवती पति, हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 3 ॥

जय मन भावन, जय अतिपावन, शोक नशावन शिव शम्भो,
विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिव शम्भो,
सहज वचन हर, जलज नयन वर, धवल वरन तन शिव शम्भो,
मदन कदन कर पाप हरन हर, चरन मनन धन शिव शम्भो,
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूलाधार हरे,
पारवती पति, हर हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥ 4 ॥